भं स्रो.वि./पानीपत/80-84/32834.—चूँकि हरियाणां के राज्यपाल की राये है कि.मै. श्रांदर्भ वून इन्डस्ट्रीज, बीवर्ज कालीनी, पानीपत, के श्रमिक श्री लखपतु तथा उसके प्रवत्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोणिक विवाद है :

बार चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को नेपायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

्सिलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धररा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रशन की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, कृरियरणा के राज्यणात इसके द्वारा सरकारी अधिसुचना मं 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अदिनियम की धारा 7 के अबीन गटित अम न्यायालय अम्बाला को विवाद ग्रस्त या उसमें संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिन भय की जिए निर्देश करते हैं. जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों ने बीच या तो वि एउप्रकृत मामला है या विवाद से मुनगत् अथवा संबंधित मामला है:---

्या श्री नेश्वयत की सेवाओं का समापन, न्यायोचित, तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

क श्रो.ति /एफ.डी.-83 84/32840.--चृतिः हरियाणां के राज्यपाल की राये है कि (1) मैं. गैडोर ट्रन प्राप्ति., यूर्निट नं. 3, स्र् कार्योगल वैरिया, करोदाबाद (2) प्रेजीकेट दी गैडोर इम्मिलाईज प्राईमरी को-श्राप्रेटिव कत्नुमरज स्टोर्टान करोदाबाद, के श्रमिक श्री श्रम पान सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है :

धीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितिर्णीय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :- '

्मित्य, अब मं बोगिक विभाद अधि नियम, 1947 की भारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा भ्रदान की गर्ड णिक्तयों का भ्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्ययाल इसके हारा सरकारी अधिमूचना मं 5415-3-अभ-60 15254. दिनांक 20 जुन, 1968 के साब पहने ए अधिमूचना सं 11495-जी-अम-68 श्रम | \$7/11245, दिनांक 7 फरवरी. 1958 हारा उत्तन अधि नियम की धारों 7 के अधीन परिता अप नगायालय के रीदाबाद को विवाद है स्त या उसमें मुसंगत या उसमें मम्बन्धित नीचे ित्या मामला न्यापनिर्णय के लिए निरित्य करते हैं, जो कि उत्तन अवस्थिकों तथा श्रमिकों के बीच यह तो विवाद एसत मामला है या विवाद से मुसंगत अथवात्सम्बन्धित सामला है :-

्व<mark>या श्री धर्म पाज सिंह को से</mark>वाग्रों का सभापन | न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.दी. 79-84/32848-—चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राये है कि में. साकष्यरी कैमीकल एण्ड इण्डस्ट्रीज प्रा लि.. ब्लाट नं. 70, मेंक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रीमुक श्री सुरजीत कुमार तथा उनके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई प्रोद्योगिक विवाद है।

क्रोर वृंकि प्रिरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :---

इसलिए, अब प्रौद्योगिक विवाद प्रधि नेयम, 1947 की धारा 10 को उक्तारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रथोग करने हुए, इरियाणा है राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिमूचना में 5415-3-धम-68/15254 दिनांक 20 जन, 1968 के सान पढ़ने ए जीवसूचना भें 11495-जी श्रम-68 धम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्याणाल महरीदावाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिला मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिश्ट करते हैं. शे कि उक्त प्रवस्त्रकों तथा श्रमिक के बीज या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत प्रथवा सुबंधित मामला है :---

्रमा भी मुरजीत कुमार की सैवास्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीव है ? यदि नहीं तो वह किस राहन का उकदार है ?

संग्रोजि/एक डो /138-84/32855..--चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं जमीरा जन्टरप्राधिन, 341 थी, नेहर शक्त कियायाद, के अधिक श्रो चून्नी लाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई की खोणिक विवाद

भौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट शरना वांछनीय समझते हैं :

इस लिए, यत्र धौडोगिक विवाद ग्रंधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अकिए जा प्रशेग करने इए हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिमूचना सं 5415-3 श्रम-68/15254, दिनांक 20 त्न 1968 के ग्राम पद्धा ए श्रिविसूचना सं 11495-जी-श्रम-68-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फण्यरी, 1958 होस्स उत्तत ग्रिविस्य की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मन्यता न्यायिवर्णय के लिए निद्धा करते हैं, जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक की बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से लुसंगत प्रथम सम्बन्धित सम्मला है : —

क्या श्री वन्नी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोवित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो बंह किस राहत का हुकदार है ?

म ग्रो वि रोहतक/15-84/32862 — चूंकि हरियाणा के राज्यणाल की राये है कि (1) मैं. जनरन मैने और हिरियाणा राज्य परिवहन राहत के (2) नियंत्रक, हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री ग्रणोक कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके ... बाद विकित मामलें में कोई ग्रीझोणिक विवाद है;

कोर नृक्ति हरिया<u>णा</u> के राज्यपाल विवाद को न्यायंतिर्णया, हेतु तिर्दिष्ट करना वाछ नीय समझ ते हैं ;

्म लिए अब प्रौद्योगिक विवाद ग्रिशित्यम, 1948 की धारा 10 की उप धारा (1) के उंण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मास्त्रां का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यमाल इसके द्वारी सरकारी अधियुचना सं 9641-1-अस/70/32573 दिनांक 16 नवस्वर, 3970 के साथ पठित संरकारी. अधिसूचना मं. 3834-एएस.श्रो. (ई) 70/1348 दिन्छ 8 मई, 1970 द्वारा उच्न अधिनियम की घाना 7 के अधीत गाँउन वन नेप्रधारण रोह्न हं की विवादप्रत्न यो उसने मुसंगत या उसने सम्बन्धित नीचे लिखा सामना न्याय्तिगैय देतृ निरिष्ट रायने हैं जो कि उसन प्रान्त्रकों तथा धिमक के नीच या तो दिनादग्रस्त मामला है या उत्तन विवाद से ऐसंगत मा नाम कियत मामला है कुल नया श्री श्रकोक कुमार की सेवाओं का संनापन न्यायोग्निस तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहन का हकदार है ?

में यो ि जो जो एक /102+84/32870 --- चूंकि हरियाणा के राज्यभाल की राये है कि मैं. दोशक मिनरन साडिंग एण्ड र पोटरी के , दोलताबाद रोड गुड़ग'या, के अमिक श्रीपती नारापण देवी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य उसमें इसके वाद विकित नामलें में कोई के अधिनिक विवाद है :

म्रांग रक्ति इंग्याणा के राज्य गत विवाद को त्यायनिर्ण्य हेतु ीनिद्या करना वांछनीय समझते हैं :

्मिनिण, अब अधिगिक चिवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई णिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 54153-अस- 68/1525 दिनांच 20 जून 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिमूचना सं. 11495-जी-ध्यम-68-ध्यम/55/11245, दिनांक 7 फरवरी 1955 हुए। उदल अधिन गर के छिए के साथ पढ़ते हुए अधिमूचना सं. 11495-जी-ध्यम-68-ध्यम/55/11245, दिनांक 7 फरवरी 1955 हुए। उदल अधिन गरित अमाध्यान करते दिहार करते हैं को कि उदल अधिक के विदार करते हैं जो कि उदल अधिक अधिक के वीक या तो विवाद प्रतामामला है या विवाद से सुसंगत अधिक संविधित मामला है:---

क्या श्रीमती नारायण देवी की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहन का हकदार है ?

मं घो.वि./एफ.डी/67-8 // 32877;---गृकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. नव तारा एण्ड क.. प्लाट नं. 168, सैक्टर 25. वल्तवगढ़, के श्रीमक श्री कृष्णा मांझी तथा उसके प्रवत्धकों। के मध्य इसमें इसके। बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है। श्रीर चृति हरियाणा के राज्यपाल दिवाद को ग्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

संद्र्यो.पि/एफ.डी./107-84/32884.---चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं स्टेनलैस एण्ड स्टील प्रोडनेटस कम्पनी, अपकी एल एफ. इ. उस्ट्रेंटल ऐरिया 11. 13/4, मध्रा रोड, फरीदाबाट, के श्रीकिक श्री वास्ट्रेंट धाम तथा एम के प्रतस्ति के मध्य इसमें इसके बाद विक्ति मामलें में कोई शीद्योगिक विवाद है;

भीर भिक्त हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यासनिर्णयह तु निदिष्ट करना वाङनोय संगझते हैं ;

हम िए, अब, ब्रौहोणिक विवाद ब्रिधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदल्त की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी ब्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ब्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-68श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उवत ब्रिधिसूचना की धारा 7 के ब्रिधीन गठित श्रम न्यायालय परोदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे निखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निविध्द करते हैं, जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ब्रथवा संदेशित भागला है :---

वया श्री वासुदेव धाम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत कसा हकदार है ?

संग्रो.कि/भिक्षनी/32891.—,चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि 1. में नियंतक, हरियाणा राज्य परिवहर, चण्डीगढ़, 2. महाप्रवन्धक, हरियाणा रोडवेंच, जीन्द, के श्राप्तिक श्री सूचे सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बार विधित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

का जिस निहित्य हो हो हो कि विवेद में भिन्य में 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खाड़ (ग) प्रारा प्रारा की की अविनय में 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खाड़ (ग) प्रारा प्रारा की की अविनय में अव

गया श्री गुर्व सिंह की सेवाओं का समापन त्यामीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?